'अभी शेष है इन्द्रधनुष' का शिल्प पक्ष

गुरपाल राम
एम.ए.(हिन्दी), कुरूक्षेत्र युनिवर्सिटी, कुरूक्षेत्र, यू.जी.सी. नैट, बी.एड., एम.एड., सी.डी.एल.यू.,
वी.पी.ओ. साहूवाला–1 तहसील व जिला सिरसा–125077

कविता कथ्य और शिल्प का समन्वित रूप होती है। कवि अपनी अनुभूति को भाषा के माध्यम से अभिव्यक्ति प्रदान करता है। भाषा सम्वेदनाओं को साकार रूप देती है। शब्दों का उपयुक्त चयन समुचित पद–विधान कविता को सम्प्रेषणीय और प्रभावोत्पादक बनाता है। अनुभूति की सच्चाई के साथ एक सशक्त शिल्प का विधान का होना भी कवि कर्म के लिए बहुत आवश्यक है। डॉ. उदयभानु हंस लिखते हैं कि– 'श्रेष्ठ कविता के लिए अनुभूति और अभिव्यक्ति दोनों का सशक्त होना परमावश्यक है।' यदि सघन अनुभूति कविता का प्राण है, तो उसकी अभिव्यक्ति के लिए उत्तम शब्द चयन, अंलकार, बिम्ब, प्रतीक, को 'उत्तम शब्दों का उत्तम विधान'है। शिल्प के अन्तर्गत कवि के शब्द भण्डार, उसकी भाषा की विशेषताओं, बिम्ब विधान, प्रतीक योजना, अंलकार सौन्दर्य, काव्य रूप और छन्दों आदि का विवेचन–विश्लेषण किया जा रहा है। ये सभी तत्त्व कविता के निर्माण में सहायक हैं। प्रस्तुत अध्याय में आलोच्य कविताओं के शैल्पिक तत्त्वों का विवेचन विश्लेषण करना ही हमारा मन्तव्य है।

कवि डॉ. मनोज छाबड़ा ने इन्हीं विचारों की अनुपालना करते हुए भाषा–प्रयोग किया है । एक उदाहरण देखिए– देख समंदर

ताल में मैं
ओक में भर पी गया हूँ
रंगों, शब्दों, मौन, नाद में
कितना जीवन जी गया हूँ
फिर काहे को
दौलत–बंगला
गाड़ी सपनों में आएँ [1]

आलोच्य कवि की काव्य–भाषा में आकर्षण, सौन्दर्यमयता, सबलता एवं स्पष्टता विद्यमान है। कवि की शब्दावली में भावों की अनुगामिनी है।

[1] –––वही –––पृ0 98

कवि ने 'भाषा बहता–नीर' की उक्ति को चरितार्थ किया है। समय प्रवाह के साथ–साथ उसमें अन्य भाषाओं के शब्द सम्मिलित होते चलते हैं और स्वयं के शब्दों का रूप भी बदलता चलता है। जो भी परिवर्तन होता है वह शब्द के स्तर पर ही होता है क्योंकि शब्द ही भाषा की सार्थक इकाई है। किसी भी कविता की काव्य रचना के काव्य–सौष्ठव का अध्ययन करने हेतु काव्य को कला पक्ष और भाव पक्ष की दृष्टि से विमल करना अनिवार्य होता है । भाषा के अन्तर्गत कई बोलियाँ समाहित होती है, किन्तु प्रकृति की दृष्टि से भाषा और बोली में अन्तर करना कठिन है फिर भी विद्वानों ने इसमें अन्तर करने का प्रयास किया है । आलोच्य कवि डॉ मनोज छाबड़ा की भाषा में सहजता और सरलता है– 'मेरी पहली कविता की गर्दन
मेरे पिता ने
अपने घुटनों के नीचे
दबा दी
और
सिर के बाल उखाड़कर
एक कसाई को थमा दिए।
वह कसाई
आजकल प्रकाशक है
और मेरे पिता –
आलोचक। [2]

कविता मानव और समाज का जीवन्त एवं भावात्मक दस्तावेज है। आज की कविता में आम आदमी का दुःख–दर्द, हंसी–खुशी और उसकी समस्याओं को स्वर मिला है । अति आवश्यक है कि आम आदमी से जुड़ी कविता की भाषा भी आम आदमी की भाषा होनी चाहिए ।

डॉ मनोज छाबड़ा 'अभी शेष हैं इन्द्रधनुष' की कविताओं की भाषा में सरलता, सहजता और आत्मीयता है। यदि उनकी अनुभूतियाँ रागात्मक है तो कविता भी कोमल और तरल है। जहाँ कविता ने अन्याय, शोषण, सामाजिक विसंगतियों, राजनैतिक विषमताओं पर कटु व्यंग्य किए हैं, वहाँ भाषा तीखी और तिक्त हो गई है। ऐसे अनुभवों के सम्प्रेषण के लिए भाषा का तेज–तर्रार हो जाना भी जरूरी लगता है, लेकिन फिर भी इसकी 'सहजता' वाली छवि मिट नहीं पाई है बल्कि कई कविताएँ तो 'सरलता' से ओत–प्रोत है। कवि ने काव्य में बिम्ब चित्र की भान्ति रेखाओं में नहीं, अपितु शब्दों के माध्यम से प्रस्तुत किया है। वह चित्र केवल स्थूल वस्तु का ही प्रतिबिम्ब न हो, अपितु उसका सम्बन्ध

[2] मनोज छाबडा : अभी शेष है इन्द्रधनुष : पृ0 68

ऐन्द्रियबोध से भी होना चाहिए अर्थात् उसमें हमारी इन्द्रियों को गुद–गुदा देने की क्षमता होनी चाहिए। काव्य–बिम्ब में प्रभावोत्पादन की क्षमता का होना अनिवार्य है और उसमें आरोपण का अभाव होना चाहिए। इसीलिए कवि डॉ मनोज छाबड़ा ने बिम्ब का वह अंलकारों की भान्ति मूल वस्तु पर ऊपर से या बाहर से आरोपित नहीं दिया। बिम्ब का वस्तु से सीधा सम्बन्ध होना चाहिए, अन्यथा बिम्ब और अंलकार में कोई अन्तर नहीं रह जाएगा। इन्हीं तथ्यों पर केन्द्रित बिम्ब विधान का उदाहरण देखिए–

'तुम्हें छूकर
मैनें अपनी रूह को छुआ
तुम्हें चूमा जब–जब
अपने अंतर को थिरकाया
तुम्हारी पारदर्शी आँखों से
झरते रहते हैं वे सारे मौसम
जिनमें मेरे व्यक्तित्व की
सभी खरोंचें छिप जाती हैं।[3]
तुम्हें तेज हवाओं का डर नहीं
इसलिए दीया भी नहीं है तुम्हारे पास
और इन तेज़ हवाओं से
बिजली के तार टूट जाते हैं जब कभी
तब जलते हो तुम ईर्ष्या से
और तरसते हो मुट्ठी भर रोशनी के लिए,
इसके बावजूद
नहीं खरीदते हो एक दीया।[4]

हिन्दी कविता में प्रतीकों के प्रयोग की परम्परा अत्यन्त प्राचीन है। प्रतीक में ऐसी शक्ति होती है कि वह अप्रस्तुत के माध्यम से सम्पूर्ण सन्दर्भ को ही अभिव्यक्त कर देता है। मानव जब अधिक भावुक या विचारक होता है, तब वह अपनी अभिव्यंजना के लिए प्रतीकों का आश्रय लेता है।

[3] ———वही ———पृ0 19

[4] मनोज छाबडा : अभी शेष है इन्द्रधनुष : पृ0 109

'प्रतीक' शब्द का सामान्य अर्थ 'संकेत' या 'चिह्न' है। आधुनिक हिन्दी साहित्य में प्रतीक शब्द को जिस रूप में ग्रहण किया गया है, उसका सम्बन्ध अंग्रेजी के ''लउइवस म्उइसमउ' से है जो कि चिह्न या संकेत का द्योतक है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने इन दोनों शब्दों का एक साथ प्रयोग किया है। ऐसे अप्रस्तुत अधिकतर उपलक्षण के रूप या प्रतीकत्व या''लउइवसपब होते हैं। प्रतीक चयन में कवि डॉ मनोज छाबड़ा ने'अभी षेश हैं इन्द्रधनुश 'में कुशलता दिखाई है–

उसके चेहरे पर

मुस्कराहट का महासागर था

उसकी

नमकीन हँसी में

शंखों से लदी नावें थीं

वह स्वतंत्र मीन–सी

फिसल–फिसल जाती थी

मेरे जीवन से।[5]

'हिन्दी शब्द सागर में इस शब्द का प्रयोग चिह्न, प्रतिरूप, प्रतिमा, संकेत आदि के अर्थ मं किया गया है।' डॉ. धीरेन्द्र वर्मा के अनुसार प्रतीक शब्द का प्रयोग उस दृश्य (अथवा गोचर) वस्तु के लिए किया जाता है, जो किसी अदृश्य (अगोचर या अप्रस्तुत) विषय का प्रतिविधिन उसके साथ अपने साहचर्य के कारण करती है, अथवा 'किसी अन्य स्तर की समानुरूप वस्तु द्वारा किसी अन्य स्तर के विषय का प्रतिनिधित्व करने वाली वस्तु प्रतीक है।' आलोच्य कृति का उदाहरण देखिए–

'द्वन्द्वों और तनावों की रात में

एक कुकुरमुत्ता

दिलाता है विश्वास

दिन आएगा

उसके लहजे से लगा –

दिन उत्सव है।

दिन उत्सव है

तभी तो उल्लसीत है कुकुरमुत्ता। [6]

[5] मनोज छाबडा : अभी शेष है इन्द्रधनुष : पृ0 24

[6] –––वही –––पृ0 64

आलोच्य काव्य–संग्रह में अलंकारों का सहज एवं स्वाभाविक प्रयोग कवि ने किया है । काव्य में अलंकार की अपेक्षा नहीं होनी चाहिए, पंत जी ने इस कथन में कुछ सार हो सकता है, पर आचार्य जयदेव के इस कथन– 'काव्य को अलंकार रहित मानने वाला, अग्नि को उष्णता विहीन क्यों नहीं मान लेता।' न केवल भामह, वामन और रीतिकालीन आलंकरिक आचार्य ही काव्य में अलंकार के एकान्त महत्त्व को प्रतिपादित करते हैं, अपितु अनेक पाश्चात्य समीक्षक और हिन्दी के आधुनिक कई आलोचक भी, अलंकार की काव्य में अनिवार्यता और उसके महत्त्व को स्वीकार करते हैं । आलोच्य कवि डॉ मनोज छाबड़ा ने अलंकारों का सहज और स्वाभाविक प्रयोग किया है । उपमान, रूपक, उत्प्रेक्षा, विभावना, व्यतिरेक, वीप्सा, मानवीकरण आदि अलंकारों का सहज प्रयोग इन्होंने किया है ।

परंतु कविता की पुस्तक से
लुप्त हो गई है कविता,
उपन्यास से खो गई है
एक कथा...
और आलोचना की दुकान पर
बैठा है कसाई। [7]

वस्तु या व्यापार की भावना चटकीली करने और भाव को अधिक उत्कर्ष पर पहुंचाने के लिए कभी किसी वस्तु का आकार या गुण बहुत बढ़ाकर दिखाना पड़ता है, कभी उसके रंग–रूप या गुण की भावना को, उसी प्रकार के और रूप रंग मिलाकर तीव्र करने के लिए समान रूप और धर्म वाली और वस्तुओं को सामने लाकर रखना पड़ता है । कभी–कभी बात को घुमा–फिराकर कहना पड़ता है । इस तरह के भिन्न–भिन्न विधान और कथन के ढंग अलंकार कहलाते हैं । इनके सहारे से कविता का प्रभाव बढ़ाते हुए लिखा है–

'हम आदमी के खोने का
नहीं करते अफसोस अब
और
शब्दों के खोने का अफसोस करने हेतु
शब्द भी कहाँ है अपने पास।
वे शब्द तो खो दिए हैं हमने[8]

[7] ———वही ———पृ0 88
[8] [8] मनोज छाबडा : अभी शेष है इन्द्रधनुष : पृ0 55

काव्य–शिल्प में अलंकार का अत्यधिक महत्त्व है। अतः इसे हम उसका अनिवार्य उपादान मान सकते है। **जैसे–**

'इन पदचापों में
कि जिसमें सुनते हो
ध्वनियाँ
हड्डियों के चटखने की....
आती है गंध तुम्हें इन आहटों से
रक्त की
तब ढँक लो तुम अपना चेहरा
फूल कढ़े रूमाल से। [9]

किसी भी कविता के काव्य शिल्प का मूल्यांकन करते समय हमें अलंकार तत्त्व पर भी विचार करना होगा। डॉ मनोज छाबड़ा के काव्य 'अभी शेष हैं इन्द्रधनुष' में अलंकारों का सहज प्रयोग हुआ है।

निष्कर्ष :–

'शिल्प' विचारों का परिधान है। यह एक ओर लेखक का मानस चित्र है तो दूसरी ओर इसे लेखक के मन की बाह्य आकृति भी कहा जाता है। इसके अन्तर्गत लेखक की अभिव्यक्ति और अभिव्यंजना के विभिन्न उपादान समाहित होते हैं।

मनोज छाबड़ा की भाषा खड़ी बोली हिन्दी है। इसके शब्द भण्डार में– तत्सम्, तद्भव, देशी–विदेशी शब्दों का समावेश हुआ है। देशज शब्दों में पंजाबी, हरियाणवीं, बंगला, गुजराती आदि शब्द प्रयुक्त हुए हैं तो विदेशी शब्दों में उर्दू, फारसी और अंग्रेजी के शब्दों का सफल प्रयोग हुआ है।

इनकी काव्य भाषा सहज, सरल, प्रवाहमयता, लयात्मकता के गुणों के ओत–प्रोत है। कोमलकांत शब्दावली में गद्यात्मकता के सहारे सपाट–बयानी इनकी भाषा की विशेषताएँ है। भाषा में प्रश्नानुकूलता और व्यंग्यात्मकता का सुन्दर पुट है। मुहावरे और लोकोक्तियों ने इनकी भाषा को आम आदमी के जीवन से जोड़ा है। भाषा भावों, विचारों की अभिव्यक्ति के समर्थ और सभी प्रकार के संदर्भों को अभिव्यक्त करने में सक्षम है।

मनोज छाबड़ा की बिम्ब योजना बहुत ही सटीक और सारगर्भित है। इन्होंने दृश्य, ध्वनि, घ्राण, अस्वाद्य, स्पर्श आदि ऐन्द्रियबोधक बिम्बों का सफल प्रयोग किया है । राजनीति, धर्म, अर्थ,

[9] मनोज छाबडा : अभी शेष है इन्द्रधनुष : पृ0 75

प्रकृति और समाज से भी बिम्बों को उठा कर इन्होंने अपनी कविता को अर्थ सम्पन्न बनाया है। वस्तुबिम्ब, अलंकृत बिम्ब और मानस बिम्ब इनके बिम्ब विधान की अन्य विशेषताएँ हैं।

जब एक ही शब्द या अप्रस्तुत किसी सम्पूर्ण अर्थ सन्दर्भ को व्यंजित करने की शक्ति अर्जित कर लेता है, तब वह प्रतीक बन जाता है। प्रतीक कलाकार के भावों के सम्प्रेक्षण का माध्यम होता है। ये अदृश्य सत्य को इन्द्रिय ग्राह्य रूप में सांकेतिक अभिव्यक्ति प्रदान करता है और इस तरह कला जगत के सूक्ष्म सौन्दर्य को अभिव्यक्त करता है। मनोज छाबड़ा ने सांस्कृतिक, प्राकृतिक, दार्शनिक, वैज्ञानिक, जीवन व्यापारों से, राजनीतिक संदर्भों से, सामाजिक परिवेश से अपनी प्रतीक योजना को सम्पन्न किया है। इनके प्रतीक इनकी अनुभूति विशेष के व्यंजक है और इनके भावों एवं मानसिक चित्रों को उपस्थित करने में सक्षम है। इनके प्रतीकों से अर्थ छवि की ज्योति प्रस्फूटित होती है और प्रतीक सम्पूर्ण सन्दर्भ–वृत्त को आलोकित करते हैं।